Resource: अध्ययन नोट्स - पुस्तक परिचय (टिंडेल)

Aquifer Open Study Notes (Book Intros)

This work is an adaptation of Tyndale Open Study Notes © 2023 Tyndale House Publishers, licensed under the CC BY-SA 4.0 license. The adaptation, Aquifer Open Study Notes, was created by Mission Mutual and is also licensed under CC BY-SA 4.0.

This resource has been adapted into multiple languages, including English, Tok Pisin, Arabic (عربي), French (Français), Hindi (हिंदी), Indonesian (Bahasa Indonesia), Portuguese (Português), Russian (Русский), Spanish (Español), Swahili (Kiswahili), and Simplified Chinese (简体中文).

अध्ययन नोट्स - पुस्तक परिचय (टिंडेल)

PHP

फिलिप्पियों

आप एक गैर-मसीही संसार में एक मसीही के रूप में कैसे जीते हैं? जब आपके चारों ओर के लोग आपके विश्वास के विरोधी होते हैं, तो आप कैसी प्रतिक्रिया देते हैं? पौलुस ने इस मार्मिक पत्र को फिलिप्पी की कलीसिया के सताए गए मसीहियों को प्रोत्साहित करने तथा उनके सामने आने वाली कठिनाइयों में उन्हें दृढ़ करने के लिये लिखा। पौलुस ने यह पत्र बन्दीगृह में रहते हुए लिखा—वे स्वयं भी अपने विश्वास के कारण दुःख उठा रहे थे—परन्तु उन्होंने यह दिखाया कि एक मसीही किसी भी परिस्थिति में मसीह में आनन्दित रह सकते हैं।

सन्दर्भ

फिलिप्पी पूर्वोत्तर यूनान में मकिदुनिया प्रान्त की एक छोटी रोमियों की बस्ती थी। एजियन सागर से लगभग दस मील की दूरी पर स्थित, फिलिप्पी अपनी रणनीतिक स्थिति के कारण महत्वपूर्ण था क्योंकि यह वाया एग्नेशिया पर स्थित था, जो मकिदुनिया से होकर जाने वाला एक प्रमुख पूर्व-पश्चिम रोमी मार्ग था।

फिलिप्पी नगर ने मसीह का सुसमाचार प्रेरित पौलुस से उनकी दूसरी मिशनरी यात्रा (लगभग 50 ईस्वी; देखें प्रेरि 16:11–40) के दौरान सुना। आरम्भ से ही पौलुस के प्रचार का विरोध किया गया। वहाँ अपने अल्पकालिक निवास के समय उन्हें बन्दीगृह में डाल दिया गया और फिर नगर छोड़ने के लिये कहा गया, परन्तु इसके पूर्व वहाँ नये विश्वासियों का एक समूह स्थापित हो चुका था (प्रेरि 16:35–40)।

लगभग छः वर्ष बाद (56–57 ईस्वी), अपनी तीसरे मिशनरी यात्रा के दौरान, प्रेरित पौलुस ने पुनः फिलिप्पी का दौरा किया (देखें प्रेरि 20:1–6)। सम्भव है कि इस यात्रा के बाद वे फिर कभी फिलिप्पी के मसीहियों से नहीं मिले (लेकिन देखें 1 तीमु 1:3, जो लगभग 63 ईस्वी में लिखा गया था)।

पौलुस ने फिलिप्पियों को यह पत्र बन्दीगृह में रहते हुए लिखा। इपफ्रुदीतुस फिलिप्पियों की ओर से पौलुस के पास एक आर्थिक भेंट लेकर आए थे और अब फिलिप्पी लौट रहे थे, तो पौलुस ने उनके साथ यह प्रेमपूर्ण और उत्साहवर्धक पत्र कलीसिया के लिये भेजा। पौलुस जानते थे कि फिलिप्पी के मसीही सताव का सामना रहे थे, इसलिए वे उन्हें समर्थन देना और उन्हें दृढ़ करना चाहते थे, इसलिए उन्होंने मसीह के लिये अपने बन्दी होने के अनुभव को उनके साथ साझा किया।

सारांश

संक्षिप्त परिचय (1:1–2) के बाद, पौलुस फिलिप्पियों के लिये परमेश्वर के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हैं और उनकी आत्मिक उन्नति के लिये प्रार्थना करते हैं (1:3–11)। इसके बाद, वे अपने बन्दी होने के अनुभव के विषय में बताते हैं और कैसे इससे सुसमाचार के प्रचार में वृद्धि हुई है (1:12–19)। पौलुस की सबसे बड़ी लालसा यह है कि वे किसी भी परिस्थिति में मसीह के लिये जीवित रहें और मरें (1:20–26)। इसी प्रकार, फिलिप्पियों को भी मसीह के लिये दुःख उठाते हुए अपने विश्वास में दृढ़ रहना चाहिए (1:27–30)। उन्हें मसीह के उदाहरण को स्मरण करते हुए दिल से एक-दूसरे का साथ देना चाहिए, जिन्होंने उनके लिये अपना जीवन बलिदान करने में सब कुछ त्याग दिया (2:1–18)।

फिलिप्पियों की स्थिति जानने और अपनी स्थिति बताने के लिये, पौलुस शीघ्र ही इपफ्रुदीतुस और तीमुथियुस को उनके पास भेजेंगे, जिन्होंने मसीह के लिये दुःख उठाने की अपनी तत्परता सिद्ध की है (2:19–30)।

पौलुस आगे फिलिप्पियों को यहूदी-मसीही प्रचार से सावधान करते हैं, जिसमें मूसा की व्यवस्था के पालन की आवश्यकता बताई जा रही थी (3:1–3)। वे अपने पूर्व जीवन को स्मरण करते हैं, जब वे पूरी तरह से व्यवस्था के पालन में लगे हुए थे। अब उन्होंने यह समझ लिया है कि सबसे महत्वपूर्ण बात मसीह को जानना, उनके दुःखों और मृत्यु में सहभागी होना, और उनके पुनरुत्थान की सामर्थ्य का अनुभव करना है, चाहे वह वर्तमान जीवन में हो या भविष्य में (3:4–11)। सभी विश्वासियों को मसीह में पूर्ण जीवन का अनुसरण करने में एक विचार रखना चाहिए (3:12–4:1)।

अन्त में, पौलुस फिलिप्पियों को आनन्द, प्रार्थना और धन्यवाद से भरपूर जीवन जीने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, ताकि वे अपने मनों को परमेश्वर की अच्छी आशीषों पर केन्द्रित रखें, चाहे वे सताव में ही क्यों न हों (4:2–9)। वे उनके द्वारा भेजे गए उपहार के लिये धन्यवाद प्रकट करते हैं। वे बताते हैं कि उन्होंने हर दशा में संतुष्ट रहना सीख लिया है, और यह संकेत देते हैं कि उन्हें भी इसी प्रकार जीना सीखना चाहिए (4:1–20)। हमेशा की तरह, पौलुस अपने पत्र का समापन परमेश्वर

की स्तुति, विश्वासियों को अभिवादन, और प्रभु के अनुग्रह की प्रार्थना के साथ करते हैं (4:21–23)।

लेखन की तिथि और स्थान

इफिसियों, फिलिप्पियों, कुलुस्सियों और फिलेमोन पत्रियों को प्रायः बन्दीगृह की पत्रियाँ कहा जाता है, क्योंकि इनमें प्रत्येक में यह उल्लेख किया गया है कि वे बन्दीगृह से लिखी गई थीं। यह निश्चित रूप से स्वीकार्य नहीं है कि ये पत्रियाँ कहाँ और कब लिखी गई थीं। पारम्परिक रूप से, इन्हें रोम से जोड़ा गया है, जहाँ पौलुस 60–62 ईस्वी के दौरान गृह कैद में और फिर 64–65 ईस्वी के आसपास पुनः कैद किए गए थे। हाल ही में, विद्वानों ने इफिसुस (53–56 ईस्वी) से लिखे जाने की सम्भावना का समर्थन किया है। जब पौलुस उस नगर में दो से तीन वर्षों तक रहे, तब उन्हें बहुत विरोध और दुःखों का सामना करना पड़ा (देखें प्रेरि 19:23–41; 2 कुरि 11:23–28)।

साहित्यिक एकता

लेखन में विषयवस्तु और भाव में अचानक परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए (विशेष रूप से 3:2–4:3 और 4:10–20 देखें), कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि फिलिप्पियों वास्तव में कई विभिन्न पत्रियों या अंशों का संग्रह है, जिन्हें किसी अज्ञात सम्पादक द्वारा संकलित किया गया। एक प्रारम्भिक मसीही लेखक, पोलिकार्प, ने पौलुस के फिलिप्पियों को लिखे गए "पत्रों" के विषय में बात की। हालाँकि, कई अन्य विद्वानों का मानना है कि यह एक ही संगठित पत्री है, जिसे स्वयं पौलुस ने लिखा था, जो अपनी पत्रियों में कई बार नए विषयों को सम्बोधित करने के लिये अप्रत्याशित रूप से विषय बदल देते थे।

अर्थ और सन्देश

पौलुस बन्दीगृह से उन मसीहियों को लिखते हैं जो विरोध का सामना कर रहे हैं, और उन्हें अपने जीवन तथा दृष्टिकोण का अनुसरण करने के लिये प्रेरित करते हैं। वे अपने साहस, समर्पण, आत्मविश्वास और सन्तोष के विषय में बताते हुए, यहाँ तक कि बन्दीगृह में भी, फिलिप्पियों को उत्साहित करते हैं कि वे भी अपनी परिस्थितियों में इसी प्रकार प्रतिक्रिया दें। ऐसा करते हुए, वे हमें यह दिखाते हैं कि आनन्द, शान्ति, सन्तोष, प्रार्थना, धन्यवाद और मसीह के प्रति भक्ति से परिपूर्ण एक मसीही जीवन सभी परिस्थितियों से ऊपर उठ सकता है।

यद्यपि पौलुस बन्दीगृह में हैं, फिर भी वे लज्जित नहीं होते, बल्कि आनन्दित होते हैं कि इससे सुसमाचार के प्रचार में और अधिक वृद्धि हुई है। वे मसीह के लिये साहसी बने रहने की इच्छा रखते हैं, चाहे परिणाम कुछ भी हो, क्योंकि वे जानते हैं कि उन्हें मसीह के लिये जीवित रहने के लिये बुलाया गया है, और वे मसीह के लिये दुःख उठाना सौभाग्य मानते हैं (देखें 1:12–26)। यहाँ तक कि बन्दीगृह में भी, पौलुस यह कह सकते हैं कि उनकी सबसे गहरी लालसा मसीह के जीवन से पूर्ण रूप से भर जाना है। वे मसीह के दुःखों और मृत्यु में सहभागी होने के लिये तैयार हैं, और वे मसीह के पुनरुत्थान की सम्पूर्ण सामर्थ्य का अनुभव करने के लिये उत्सुक हैं। जो कुछ भी हो, वे एक दिन मसीह के समान मृतकों में से जी उठेंगे (3:7–14)। इसी बीच, पौलुस ने यह सीख लिया है कि वे जीवन में किसी भी दशा में संतुष्ट रहना जानते हैं। वे मसीह पर निर्भर रहते हैं और उन्होंने पाया है कि मसीह की सामर्थ्य सबसे कठिन परिस्थितियों में भी पर्याप्त है (4:11–13)।

पौलुस फिलिप्पियों से यह आग्रह करते हैं कि जब वे विरोध का सामना करें, तब वे प्रभु में आनन्दित रहें। उन्हें किसी भी बात की चिन्ता नहीं करनी चाहिए, परन्तु सभी आवश्यकताओं के लिये परमेश्वर के सम्मुख धन्यवाद के साथ भरे हृदय से प्रार्थना करनी चाहिए। इस प्रकार, वे परमेश्वर की गहरी शान्ति का अनुभव करेंगे (देखें 4:4–9)।